June 29, 2024
Saturday

Date:
P. No.: 01

पाठ =>

भक्तिन (संस्मरण)

(महादेवी वर्मा)

जीवनपरिचय =>

श्रीमती महादेवी वर्मा का जन्म फर्रुखाबाद उत्तर प्रदेश में 1907 ई० में हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा इंदौर के मिशन स्कूल में हुई थी। नौ वर्ष की आयु में इनका विवाह हो गया था परंतु इनका अध्ययन चलता रहा। 1929 में इन्होंने बौद्ध भिक्षुणी बनना चाहा, परंतु महात्मा गाँधी के संपर्क में आने पर ये समाज सेवा की ओर उन्मुख हो गयीं। 1960 में इन्हें प्रयाग-महिला विद्यापीठ का कुलपति बनाया गया। इनके व्यापक, शैक्षिक, साहित्यिक और सामाजिक कार्यों के लिए भारत सरकार ने 1956 ई० में इन्हें पद्मभूषण से सम्मानित किया। 1983 में यामा-कृति पर इन्हें ज्ञान पीठ पुरस्कार से सम्मानित किया। 1987 में इनकी मृत्यु हो गयी।

प्रमुख रचनाएँ =>

काव्य संग्रह - नीहार, रश्मी, नीरजा, यामा, दीपशिखा,
संस्मरण - अतीत का चलचित्र, स्मृति की रेखाएँ, पथ के साथी, मेरा परिवार,
निबंध संग्रह - श्रृंखला की कड़ियाँ, आपदा, संकलपिता, भारतीय संस्कृति के स्वर।

साहित्यिक विशेषताएँ ⇒

साहित्य सेविका और समाज सेविका दोनों रूपों में महादेवी वर्मा की प्रतिष्ठा रही महात्मा गाँधी की दिखाई राह पर अपना जीवन समर्पित करके इन्होंने शिक्षा और समाज कल्याण के क्षेत्र में निरंतर कार्य किया ये बहुमुखी प्रतिभा की धनी थीं। ये छायावाद के चार स्तंभों से एक हैं। इनकी चर्चा निबंधों और संस्मरणात्मक रेखा चित्रों के कारण एक अप्रतिम गद्यकार के रूप में भी होती है, इन्हें छायावाद की शक्ति भी कहा जाता है। महादेवी जी की मर्मभेदी व करुणामयी दृष्टि इस चरित्रों की साधारणता तत्वों का संधान करती हैं। इस तरह उन्होंने समाज के शोषित, पीड़ित तबके को अपने साहित्य में नायकत्व प्रदान किया है।

भाषा शैली ⇒

लेखिका ने अंतरमन की अनुभूतियों का अंकन अत्यंत मार्मिकता से किया है इनकी भाषा में बनावटी-पन नहीं है। इनकी भाषा में संस्कृतनिष्ठ शब्दों की प्रमुखता है। इनके गद्य साहित्य में भावनात्मक संस्मरणात्मक, समिक्षात्मक इतिवृत्तात्मक आदि अधिक शैलियों का रूप दृष्टिगोचर होता है। मर्मस्पर्शिता इनके गद्य की प्रमुख विशेषता है।

साहित्य में स्थान ⇒

आधुनिक काल के चार स्तंभों में से एक, छायावाद की शक्ति कही जाने वाली महादेवी वर्मा का नाम युगों-युगों तक स्मरणीय रहेगा।

प्रश्नः 1 भक्तिन अपना वास्तविक नाम लोगों से क्यों छुपाती थी ? भक्तिन को यह किसने और क्यों दिया होगा ?

उत्तरः 1 भक्तिन का वास्तविक लछमिन अर्थात् लक्ष्मी था। जिसका अर्थ है — धन की देवी। लेकिन लक्ष्मी के पास धन बिल्कुल नहीं था, वह बहुत गरीब थी। इसलिए वह अपना वास्तविक नाम छुपाती थी। उसे यह नाम उसके घर वालों ने दिया होगा। भारतीय समाज में लड़की का पैदा होना वास्तव में लक्ष्मी का घर आना माना जाता है, इसलिए उसके जन्म लेने पर उसका यह नाम रखा दिया।

प्रश्नः 2 दो कन्या-रत्न पैदा करने भक्तिन पुत्र-महिमा में अंधी अपनी जिठानियों द्वारा घृणा व उपेक्षा का शिकार बनी, ऐसी घटनाओं से ही अक्सर यह धारना चलती है, कि स्त्री ही स्त्री की दुश्मन होती है। क्या इससे आप सहमत हैं ?

उत्तरः 2 दो कन्या-रत्न पैदा करने पर ही भक्तिन पुत्र-महिमा में अँधी अपनी जिठानियों द्वारा घृणा व उपेक्षा की शिकार बनी, भक्तिन की सास ने तीन पुत्रों को जन्म दिया तथा जिठानियाँ भी पुत्रों को जन्म देकर सास की बराबरी कर रही थी, ऐसी स्थिति में भक्तिन द्वारा सिर्फ कन्याओं के जन्म देने से वे उसकी उपेक्षा करने लगी थे सही है कि स्त्री ही स्त्री की

दुश्मन होती है, भक्तिन को उसके पति से अलग करने के लिए अनेक षड़यंत्र भी व्यास व जिठानियों ने किये। दूसरी तरफ पुरुष को भी गलत कार्य के लिए नारियाँ ही उकसाती हैं। नवविवाहिता को दहेज के लिए प्रताड़ित करने वाली स्त्रियाँ ही होती हैं।

प्रश्नः 3 भक्तिन की बेटी पर पंचायत द्वारा जबरन पति थोपा जाना एक दुर्घटना भर नहीं, बल्कि विवाह के संदर्भ में स्त्री के मानवाधिकार (विवाह करें या न करें अथवा किससे करें) इसकी स्वतंत्रता को कुचलते रहने की सदियों से चली आ रही सामाजिक परंपरा का प्रतीक है। कैसे?

उत्तरः 3 नारी पर अनादिकाल से हर फैसला थोपा जा रहा है। विवाह के बारे में वह निर्णय नहीं ले सकती माता पिता जिसे चाहें वहीं उसका पति बन जाता है, लड़की की इच्छा उसमें बिल्कुल शामिल नहीं होती, लड़की यदि मान जाति है, तो ठीक वरना उसकी शादी जबरजस्ती कर दी जाती है उसे इस बात का कोई अधिकार नहीं है, कि वह किससे विवाह करे किससे न करे, उसके इस मानव अधिकार को तो माता पिता सदियों से कुचलते रहे हैं।

प्रश्नः 4 भक्तिन अच्छी है, यह कहना कठिन होगा, क्योंकि उसमें दुर्गुणों का अभाव नहीं लेखिका ने ऐसा

क्यों कहा होगा ?

उत्तर:4 भक्तिन में सेवा-भाव है वह कर्तव्य परायणा है, परंतु इसके बावजूद इसमें अनेक दुर्गुण भी हैं। लेखिका उसे अच्छा कहने में कठिनाई महसूस करती है लेखिका को भक्तिन के निम्नलिखित कार्य दुर्गुण लगते हैं—

① वह लेखिका के इधर-उधर पड़े पैसे रुपये भंडार घर की मटकी में छिपा देती है, जब उससे इस कार्य के लिए पूछा जाता है, तो वह स्वयं को सही ठहराने के लिए अनेक ~~तर्क~~ तर्क देती है।

② वह लेखिका को प्रसन्न रखने के लिए बात को इधर-उधर घुमाकर बताती है, वह इसे झूठ नहीं मानती।

③ शास्त्र की बातों को भी वह अपनी सुविधानुसार सुलझा लेती है, वह किसी भी तर्क को नहीं मानती।

④ वह दूसरों को अपने अनुसार चलाना चाहती है। परंतु स्वयं में कोई परिवर्तन नहीं करती।

⑤ पढ़ाई-लिखाई में उसकी कोई रुची नहीं है।

प्रश्न:5 भक्तिन द्वारा शास्त्र के प्रश्न को सुविधा से सुलझा लेने का क्या उदाहरण लेखिका ने दिया है ?

उत्तर: 5 जब लेखिका चोरी हुए पैसों के बारे में लक्ष्मिन से पूछती है, तो वह कहती है, कि पैसे मैंने संभालकर रख दिये हैं, क्या अपने ही घर में पैसे संभालकर रखना चोरी है, वह कहती है कि चोरी और झूठ तो धर्मराज युधिष्ठीर में भी होगी, नहीं तो वे श्री कृष्ण को कैसे खुश रख सकते थे और संसार चला सकते थे चोरी करने की घटनाओं और महाराज युधिष्ठीर के उदाहरणों के माध्यम से लेखिका ने शास्त्र प्रश्न का सुविधा से सुलझा लेने का वर्णन किया।

प्रश्न: 6 भक्तिन के आ जाने से महादेवी अधिक देहाती कैसे हो गई?

उत्तर: 6 भक्तिन देहाती महिला थी, शहर में आकर उसने स्वयं में कोई परिवर्तन नहीं किया, ऊपर से वह दूसरों को भी अपने अनुसार बना लेना चाहती है पर अपने मामले में उसे किसी प्रकार का हस्तक्षेप पसंद नहीं था, उसने लेखिका का मीठा खाना बिल्कुल बंद कर दिया, उसने दाल व मोटी रोटी खिलाकर लेखिका की स्वास्थ संबंधी चिंता दूर कर दी, अब लेखिका को रात में मकई का दलिया, सवेरे मट्ठा तिल लगाकर बाजरे के पुए ज्वार के भुने हुए भुट्टे के हरे-हरे दानों की खिचड़ी व सफेद महुए की लप्सी मिलने लगी, इन सबको वह स्वाद से खाने लगी, इसके अतिरिक्त उसने महादेवी को गाँव की भाषा भी सिखा दी। इस प्रकार महादेवी भी गाँव वाली बन गई।